अध्याय - 1
(अ) भौतिक पृष्ठ भूमि
(3) भौतिक पृष्ठ भूमि

“स्थिति तथा विस्तार”

“न्यून पर किसी देश व श्रेणी की स्थिति उस देश के भूगोल को समझने की कुँजी है।” भारत के विशिष्ट के पटाखे में स्थित विभिन्न श्रेणी के न्यून मार्गके निकट उत्तर प्रदेश के बुधवार से श्रेणी के छः जिलों महोजी, हमीरपुर, बांस, झांसी और तलिनाट जिले से जालीन जनपद भी एक जिला है। जिसका विस्तार 25°-46' से 26°-27' उत्तरी अक्षांश तथा 78°-66' से 79°-56' पूर्वी देशान्त नम्बर के मध्य है। इसका बीमारी त्वरित 5449 वर्ग किलो मीटर है। इसी पूर्व से पश्चिम तक नव्रता 93 फिट मी. तथा उच्च उत्तर से दक्षिण सादार 68 फिट मी. है।

इस जिले की उत्तरी सीमा पर जिला इटावा, उत्तर पूर्व में कानपुर देहात, दक्षिण पूर्व में हमीरपुर, दक्षिण में झांसी, तथा पश्चिम में बंगाल निर्णात जिला स्थित है। यमुना नदी इसकी उत्तरी सीमा तथा बेतवा नदी इसकी दक्षिणी पूर्वी सीमा एवं पूर्वी पूर्वी नदी इसकी पश्चिमी सीमा का निर्धारण करती है। अतः यह जिला तीन ओर से नदियों से घिरा हुआ है। और इसका आकार देखने में पहले भूत के समान प्रतीत होता है। इसकी जनसंख्या 1991 के अनुसार 989,388 है।

जनपद जालीन में मुख्य चार तहसीलें- कोंच, कालपी, जालीन, तथा उर्ध हैं। उर्ध तहसील मेरा क्षेत्र अध्ययन एवं शोध-श्रेणी है। इसका विस्तार 25°59’ उत्तर और 29°28’ पश्चिम है। तथा उर्ध तहसील का क्षेत्रफल 94.35 वर्ग किलोमीटर एवं जनसंख्या 1991 के अनुसार 148700 है। उर्ध तहसील के उत्तर में जालीन तहसील, उत्तर पूर्व में कालपी, पश्चिम में कोंच, दक्षिण में झांसी जनपद की गतिखंड तहसील तथा दक्षिण पूर्व में हमीरपुर जिले की राठ तहसील है। इसकी विशेषता सीमा बेतवा नदी निर्धारण करती है। उर्ध तहसील में 153 गांव तथा 11 न्याय पंचायतें सम्मिलित हैं।

1. वी.वी. सिंह, पी.एस. गौतम, झालिंग साह भट्ट, भूमि उपयोग एवं नियोजन, उत्तर भारत भूगोल पत्रिका “पेज 147” (12)
LOCATION MAP OF STUDY AREA
उद्धारचन -

अध्ययन क्षेत्र में उद्धारचना के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की विषयताओं पायी जाती हैं। विन्याचल पर्वत श्रेणियों के निकट स्थित होने के कारण यहाँ का क्षेत्र पटारी है तथा यमुना बेतवा एवं पहुँच नदियों के प्रभाव के कारण धरातल समतल तथा कनार क्षेत्र युक्त भी है। यहाँ की मुख्य नदी बेतवा गहरी घाटियाँ का निर्माण करती है तथा इस प्रकार पर्वत श्रेणियों तथा नदी के प्रभाव के कारण धरातलीय बनावट पटारी एवं मैदानी दोनों ही प्रकार की है। इस क्षेत्र में अधिकतम ऊँचाई वाले पहाड़ आदि नहीं हैं। लगभग 300,375 और 400 मी. की कालूर लाइनें ही इस क्षेत्र के मानचित्र में हैं। अधिकतम ऊँचाई का लगभग 45 क्षेत्र 300, 400 मी. की समाप्त रेखाओं के अन्तर्गत होता है। ¹

अन्य: यहाँ पर पटारी क्षेत्र अधिक है। तथा नदियों के किनारे का क्षेत्र मैदानी एवं क्षेत्र युक्त है। अधिकांश पहाड़ चोटियों रहित और न्यून दाल बालों हैं। मुख्य चट्टानें लाइम स्टोन, सेंड स्टोन, तथा ट्रेनाइट की हैं। क्षेत्र का उत्तरी पूर्वी सीमा अधिक क्षेत्र युक्त तथा ऊँची नीची है। जबकि उत्तर-दक्षिण पहाड़ी की ओर बढ़ते जाते हैं, धरातल समतल बनाया जाता है।

भूगर्भिक संरचना

किसी भी क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना उस क्षेत्र की धरातलीय बनावट पटार, पहाड़ तथा नदियों आदि से प्रभावित होती है। उक्त क्षेत्र की भू-गर्भिक संरचना में भी मुख्य रूप से विभिन्न श्रेणियों तथा श्रेणी के वाले होती हैं। विभिन्न श्रेणियों के बीच से अधिकतम ऊँचाई की वाले क्षेत्रों के रूप में विभिन्न श्रेणियों के समान ही भूगर्भिक संरचना चार क्षेत्रों में विकसित हुई है। ² ये नियमणिक हैं।

• आरहित क्रम
• प्रवर्तन क्रम
• विन्याचल क्रम
• ताजा जमाव

नदियों के प्रभाव के कारण इस क्षेत्र का विकास एक कदमों के आकार में हुआ है, जिसका धरातल समतल तथा किनारे उठे हुए एवं कनार, क्षेत्र युक्त है। इस क्षेत्र का भाग पटारी तथा समतल दोनों ही प्रकार का है। क्योंकि विन्याचल क्रम तथा नदियों के द्वारा इसका निर्माण हुआ है। इस कारण इस क्षेत्र में अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्र नहीं हैं। "इस क्षेत्र की चट्टानें कहीं पर कठोर तथा कहीं पर मुलायम है। इस क्षेत्र में कोंकर, सेंड, ल्यास्टर तथा मोरें, ग्रेनाइट आदि काफी मात्रा में पायी जाती है।

इस क्षेत्र की भू-गर्भिक रचना के कारण विभिन्न 200 सालों में इस क्षेत्र में कभी भूमक्ष कभी नहीं आया। इस क्षेत्र में गहराई में मात्र चट्टानों का अभाव है तथा इस क्षेत्र की भूमि काफी गहरी और पुरानी है। इस क्षेत्र में भूमि का जल स्तर मध्य भाग में 16 से 24 मीटर तथा किनारों पर 30 मीटर से भी अधिक है।

यह श्रेणी आनेवाले चट्टानों से समृद्ध है जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ मिट्टी अधिकतर होता है। यह क्षेत्र आनेवाले चट्टानों से समृद्ध है जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ मिट्टी अधिकतर होता है। यहाँ प्रायः पहाड़ियों का अवलोकन करने पर पाई जाने वाली मोरें, ल्यास्टर और अन्य पत्थर विश्राम होता है। इस क्षेत्र का जल स्तर मध्य भाग में 16 से 24 मीटर तथा किनारों पर 30 मीटर से भी अधिक है।

1. R.L. Singh, India Regional Geography, Page No. 600 (Bundelkhand Region).
2. R.L. Singh, India Regional Geography, Page No. 599 (Bundelkhand Region).
3. मनमय जातीन प्रयोगशाला से खेत तक कुंभ प्रसार पखवाक
जनपद जालीन की बाह्य सीमा का निर्धारण मुख्य रूप से तीन नदियों-यमुना, नेवा और पहुंच से हुआ है। इस कारण इस क्षेत्र की प्रवाह प्रणाली में इन्हीं मुख्य नदियों का विशेष योगदान है। अध्ययन क्षेत्र की मुख्य नदी बेतवा है जो कि अपनी सहायक नदियों एवं उनसे निकली गई नदीयों के साथ इस क्षेत्र के प्रवाह तन्त्र को प्रभावित करती है। इस क्षेत्र की लगभग 70% सिंचाई एवं जलपूर्ति भी बेतवा तथा इन्हीं सहायक नदियों के द्वारा ही होती है। "बेतवा नदी का वर्ष में 815,000 क्यू.मी. पानी सिंचाई के कार्यों में प्रयोग किया जाता है।"  

बेतवा नदी के अतिरिक्त इस क्षेत्र में दो मुख्य नाले कटरी नोन, एवं मलंगा नाला भी है, जो जल निकासी के साथ ही साथ सिंचाई का कार्य भी करते हैं। तथा बेतवा नदी से निकली गई बेतवा नहर भी इस कार्य में सहयोग करती है। इसके अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में कुछ अन्य नाले, तालाब, पोखर आदि आते हैं। जो सिंचाई कार्य में सहयोग देते हैं। इनमें से उदाहरण के मध्य भाग में स्थित माहिल का तालाब मुख्य है, जो अब सूखकर सिंचाई के लिये अनुपयुक्त हो गया है।

1. उत्तर भारत मूर्ति पर्यावरण पेज नं. 133 के.एल. सेंगर भाग - 24 1988 दिसंबर
2. R.L. Singh, India Regional Geography, Page No. 599 (Bundelkhand Region).
मानवीय पर्यावरण के समस्त तत्वों में जलवायु अधिक प्रभावशाली तत्व है। जिसका किसी स्थान के जलसंरक्षण पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

जलवायु जालीन देश के मध्य भाग में स्थित है। जिसके कारण उक्त क्षेत्र समुद्री जलवायु के प्रभाव से मुक्त है और मौसमी शेषीय जलवायु से प्रभावित है।

किसी भी क्षेत्र की जलवायु वहाँ की कृषि दशा, आर्थिक विकास, मानव वरसाव आदि सभी दशाओं की प्रभावित करती है। यहाँ की जलवायु राजस्थान की मल्लथाली जलवायु की तरह शुष्क है। यहाँ पर भी रात्रें ठंडी एवं दिन गर्म एवं शुष्क होते हैं। ग्रीष्म क्रूः में दिन में भरलोट लू चलती है एवं तापमान भी ऊपर रहता है। यहाँ की जलवायु मुख्य रूप से भूमध्य वातावरण से प्रभावित है। अधिकांश वर्षा इसी मानसून से होती है तथा कभी-कभी वहाँ बंगाल की वाली का मानसून भी वर्षा करता है।

उक्त क्षेत्र में ग्रीष्म क्रूः अपेक्षाकृत अधिक तापमान होता है तथा ग्रीष्म क्रूः का औसत तापमान 29.50° सेंटीग्रेड से 32.50° सेंटीग्रेड के मध्य रहता है। फिन्नु, कभी-कभी यह तापमान 45° सेंटीग्रेड से भी ऊपर चला जाता है।

ग्रीष्म क्रूः में भूतल पर भी अंधियां चलती है तथा पठारी एवं मल्लथाली जलवायु के प्रभाव के कारण ग्रीष्म क्रूः के विनों की अपेक्षा रातें ठंडी होती हैं। शीत क्रूः का समय अक्टूबर से फरवरी के मध्य रहता है। और शीत क्रूः का औसत तापमान 16.5° से.फ़े.से. 21° से.फ़े. तक रहता है। फिन्नु कभी-कभी तापमान 10° से 12° से. तक भी गिर जाता है। शीत क्रूः में भी ग्रीष्म क्रूः के समान ही दिन की अपेक्षा रातें अधिक ठंडी हो जाती है तथा शीत ताप का प्रशीन रहता है। वर्षा क्रूः में औसत तापमान 20° से.फ़े. से 25° से.फ़े. के मध्य रहता है। उसी शहर का वार्षिक औसत तापमान 25° से.फ़े. से 30° से.फ़े. तक है।

उक्त क्षेत्र की अधिकांश वर्षा दक्षिणी पश्चिमी मानसून से होती है। सबसे अधिक वर्षा क्रूः में जून से सितम्बर के मध्य होती है जो कि कुल वर्षा का लगभग 90% है। कुछ वर्षा शीत क्रूः में अक्टूबर से फरवरी के मध्य भी होती है जो अधिक तापमॉल्यूम या चक्रवातों के प्रभाव से अधिक होती है। कि रबी की फसल के लिये लाभप्रद रहती है। शीतकाल अक्टूबर, नवम्बर तथा अप्रैल के महीनों में होती है। ग्रीष्म क्रूः का मौसम सूखा ही रहता है।

1. की.सिंह, की.एस. चौहान, शालिंग राम राजक, उत्तर भारत मूर्तिक पश्चिम-24, 1988 "पेज 147"  
2, 3, 4, 5 - R.L. Singh, India Regional Geography, Page No. 601 (Bundelkhand Region).
उर्वर तहसील में चप्पले 10 वर्षों का वर्षा का वितरण तालिका (1) में स्पष्ट है। (1)

<table>
<thead>
<tr>
<th>स्थान</th>
<th>वर्ष</th>
<th>जैन</th>
<th>फरै</th>
<th>मार्च</th>
<th>अप्रैल</th>
<th>मई</th>
<th>जून</th>
<th>जुलाई</th>
<th>अगस्त</th>
<th>सितंबर</th>
<th>अक्टूबर</th>
<th>नवंबर</th>
<th>दिसंबर</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>1977</td>
<td>17</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>12</td>
<td>12</td>
<td>95</td>
<td>448</td>
<td>160</td>
<td>14</td>
<td>53</td>
<td>2</td>
<td>-</td>
<td>948</td>
</tr>
<tr>
<td>1978</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>17</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>134</td>
<td>297</td>
<td>298</td>
<td>480</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>1226</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1979</td>
<td>26</td>
<td>88</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>22</td>
<td>25</td>
<td>232</td>
<td>9</td>
<td>43</td>
<td>-</td>
<td>35</td>
<td>-</td>
<td>476</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1980</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>25</td>
<td>140</td>
<td>340</td>
<td>870</td>
<td>72</td>
<td>2</td>
<td>-</td>
<td>5</td>
<td>1454</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1981</td>
<td>-</td>
<td>4</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>2</td>
<td>108</td>
<td>10</td>
<td>78</td>
<td>131</td>
<td>3</td>
<td>3</td>
<td>-</td>
<td>339</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1982</td>
<td>20</td>
<td>-</td>
<td>7</td>
<td>11</td>
<td>-</td>
<td>20</td>
<td>193</td>
<td>185</td>
<td>132</td>
<td>-</td>
<td>30</td>
<td>18</td>
<td>616</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1983</td>
<td>9</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>151</td>
<td>26</td>
<td>45</td>
<td>308</td>
<td>201</td>
<td>173</td>
<td>86</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>899</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1984</td>
<td>2</td>
<td>3</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>11</td>
<td>220</td>
<td>148</td>
<td>174</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>558</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1985</td>
<td>7</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>60</td>
<td>344</td>
<td>157</td>
<td>202</td>
<td>114</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>884</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1986</td>
<td>19</td>
<td>54</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>68</td>
<td>310</td>
<td>106</td>
<td>15</td>
<td>25</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>योग</th>
<th>100</th>
<th>149</th>
<th>24</th>
<th>74</th>
<th>87</th>
<th>786</th>
<th>2702</th>
<th>2208</th>
<th>1571</th>
<th>283</th>
<th>30</th>
<th>23</th>
<th>7997</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>औसत</td>
<td>10.0</td>
<td>14.9</td>
<td>2.4</td>
<td>7.4</td>
<td>8.7</td>
<td>78.6</td>
<td>270.2</td>
<td>220.8</td>
<td>157.1</td>
<td>28.3</td>
<td>3.0</td>
<td>2.3</td>
<td>799.7</td>
</tr>
</tbody>
</table>

इस क्षेत्र में आंदोलन का प्रतिष्ठात वर्षा क्षेत्र में सबसे अधिक 70% से 80% तक जुलाई से सितंबर महीनों के मध्य रहता है।

ग्रीष्म जून में मार्च से अप्रैल तक यह प्रतिष्ठात कम होकर 30% से 40% तक पहुँच जाता है।

इस प्रकार उक्त क्षेत्र महसूलीय एवं शून्य जलवायु से प्रभावित है तथा यहाँ की जलवायु की धार्मिक विशेषताओं इसी से मिलती जुलती है जो क्षेत्रीय कृषि को प्रभावित करती है। जंगलों का अभाव भी यहाँ की जलवायु को प्रभावित करता है।

1. वन विभाग कार्यालय (ऑफिस रिक्टरैंड)
2. R.L. Singh, India Regional Geography, Page No. 601, 603 (Bundelkhand Region).
ORAIG TAHSIL

AVERAGE RAINFALL 1977-1988
प्राकृतिक वनस्पति:

भारत एक कृषि प्रदान देश है, जिसके कारण इसकी अधिकांश भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है। और काफी कम क्षेत्र में ही बन पाये जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र भी एक कृषि प्रदान क्षेत्र है जिसके कारण बनों की मात्रा इस क्षेत्र में काफी कम है। कुल क्षेत्रफल का केवल 7.541 हैं, क्षेत्र ही बनों एकत्रित आता है।' जो कि छोटे-छोटे आकारों में जगह-जगह फुलाँकों के रूप में फैला है। जिसमें से अधिकांश बन सरकार द्वारा संचालित एवं सम्पर्क निर्रित नहीं हैं। प्राकृतिक रूप से निदियों की गांवों में झाड़ियों के रूप में वनस्पति पाई जाती है। इसके अन्तर्गत डांक, सेमल, सलिल और बुद्धि ही अवधिक मात्रा में पाये जाते हैं। सेव के बुरा भी पाये जाते हैं किन्तु उनकी मात्रा अधिक नहीं है। कहीं-कहीं पर तेंदु पत्ता, हंगोटा, कराबुरा और करीत के बुरा भी पाये जाते हैं। इसके साथ ही सड़कों के किनारों पर तथा कुछ प्लांटिंग में आजकल यूकोल्लिभस के बुरा भी आयोपित किये जा रहे हैं। यहां का क्षेत्र पत्तारी होने के कारण तथा जलवायु, शुष्क होने के कारण घास आदि भी सिफ्त आरसत होने के किनारों में ही दिखाई देती है। घास की अन्य प्रजातियाँ जैसे पसई, तरतु, गुलाब, मुसेल, डुला, डाल, गंडर जिसमें से मुख्य रूप से मुसेल और गुलाब ही फुलाँकों के लिए उपयोगी है। किन्तु - ये घास केवल काली मिस्टरी में ही उपयोग होती है।

बुर्जों से पाई जाने वाली तकड़ी का प्रयोग प्रायः फ़रड़, इंडियन एवं पूर्वी आदि वनन के लिए ही किया जाता है। प्राकृतिक वनस्पति के लिए उपयोगिता रूप में से भी बुर्जों की कटाई करके भूमि का उपयोग अब कृषि कार्यों के लिए किया जाना लगा है। इस क्षेत्र में बुर्जों की औसत ऊंचाई 5 से 6 मी. के मध्य है, और तभी की मोटाई 2 से 5 मी. तक है।

उपयुक्त जलवायु के लिए फ़िसी भी क्रीडों विशेष में वनस्पति का एक निष्पन्न मानदंड होता है, जिसके अनुसार क्षेत्र में बनों की कम है, एवं बाग बनी हों तथा खेतों की मंडों पर भी बुर्जों का अभाव है। और यहां पर प्रीथ ख्रूँ में दूर तक दूध डालने पर नून दुस्करा का अभाव होता है। जिसके फलखंडवय दिन अधिक गर्म होते हैं तथा रातों अनेकानेक ठण्डी होती है। प्रीथ ख्रूँ प्रारम्भ होते ही फसलें उगाना कठिन हो जाता है। शुष्क क्षेत्र होने के कारण पानी के मात्रा में गर्म हवाओं पानी की जलनकर कर देती है।

मिस्टरी:

Soil is the upper weathering layer of the Earth crust"Raman "
Soil can be defined in from of mixture of silica and other minerals".
The soil is a natural body differintiated into horizons of minerals and organic constituents,
usually unconsolidated of variable depth, which differ from the parent material below in
morphology. Physical properties and Constitutions, Conical properties and composition
and biological characterestics (Joffe) (Russion)3

मिस्टरी एक प्राकृतिक संसाधन है, जो कि हमें प्रकृति के द्वारा निष्लुक्त प्रदान किया गया है। कृषि कार्यों के लिये यह एक अति आवश्यक तत्त्व है। जिसके बिना कृषि कार्य सभ्य ही नहीं हैं। और उक्त क्षेत्र की लगभग 75% जनसंख्या कृषि कार्यों में ही संलग्न है। इस कारण से भी इसका विषय महत्त्व है।

1, 2, - R.L. Singh, India Regional Geography, Page No. 601, 603 (Bundelkhand Region).
3. Hans Henney factors of soil formation Page-113
The geographical view point Dr. Madhu Sudan Sing flictation.
इस क्षेत्र की मित्रीयों को उनके भौतिक तथा रासायनिक गुणों के अन्तर के मुताबिक सात श्रेणियों में बांटा गया है। जो निम्न प्रकार है।

**मित्रीयों का वर्गीकरण तालिका - 2**

<table>
<thead>
<tr>
<th>प्राकृतिक मृदा विभाग</th>
<th>क्रमांकीकरण</th>
<th>स्थानीय नाम</th>
<th>रंग</th>
<th>श्रेणीकरण हैक्टेयर में</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>बीड़वाला क्षेत्र</td>
<td>जलाईं ठाली - 1</td>
<td>राकड़ मिट्री</td>
<td>लाल</td>
<td>45,600</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>यमुना जलाईं क्षेत्र</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>उच्च स्तरीय भूमि</td>
<td>जलाईं ठाली - 2अ</td>
<td>हल्की पड्डवा</td>
<td>बलुआ लाल भूरी</td>
<td>16,300</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>जलाईं ठाली - 2ब</td>
<td>हल्की पड्डवा</td>
<td>बोमट भूरी</td>
<td>93,000</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>जलाईं ठाली 3अ</td>
<td>हल्की काबर</td>
<td>भूरी स्लेटी</td>
<td>1,03,900</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>जलाईं ठाली 3ब</td>
<td>हल्की काबर</td>
<td>गाही स्लेटी</td>
<td>1,44,000</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>जलाईं ठाली 4अ</td>
<td>हल्की मार</td>
<td>हल्की काली</td>
<td>59,300</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>जलाईं ठाली 4ब</td>
<td>हल्की मार</td>
<td>गाही काली</td>
<td>17,700</td>
</tr>
</tbody>
</table>

नोट - यह विवरण जिले का है।

राकड़ पतरी मिट्री लाल रंग की होती है। इस मिट्री का क्षेत्र जिले में बहुत ही कम है। केवल सीमावर्ती कगार बाले क्षेत्रों में ही इस प्रकार की मिट्री पाई जाती है। जिले में इसका कुल क्षेत्रफल ४५,६५० हैक्टेयर है। ये मिट्री सतह पर कंडीली दिखाई पड़ती है किंतु नीचे की पट्टी में बलुई कंडीली होती जाती है और आधार तल में बलुआ अंडा अधिक होता है।

इस मिट्री की जल धारण क्षमता न्यूनतम होती है। जीवन तथा बहुत कम होता है। इसमें चूना बहुत कम मात्रा में होता है, परन्तु लीला तथा युक्त हरिया काफी अधिक मात्रा में उपलब्ध रहती है। खेती के लिए इस प्रकार की मिट्री का उपयोग वर्षा बाद में नितिहान, ज्वार, अक्षर जैसी फसलों की उगाने के लिए फायदा जाता है। जब की फसल के लिए केवल सिंचाई करके ही खेती की जा सकती है।

हल्की पड्डवा मिट्री सीमावर्ती कगार बाले क्षेत्रों से लगे हुये ऊंचाई बाले भू मात्रा पर पाई जाती है। जिले में इसका क्षेत्रफल १६,३५० हैक्टेयर है। सतह पर इसका रंग हलका भूरा तथा नीचे की पट्टी पर गहरा भूरा होता है। कगार की बनावट के आधार पर बलुई से बलुई बोमट होती जाती है। निचली तहों पर महीन कगार की मात्रा कुछ बढ़ती जाती है। ऊपरी पट्ठर पर चूना तल तथा आधार तल पर लीला पत्त जाता है। यह मिट्री अत्यधिक उपजाऊ होती है। इसलिए सिंचाई का उचित प्रबन्ध करके, उर्फ़ को का प्रयोग करके इसमें बहुत अच्छी पैदा की जा सकती है।

(18)
भारी पड़ुबा मिस्ट्री का श्रेण ऊँचाई पर स्थित होने के साथ ही समस्त क्षेत्र है। इस मिस्ट्री का श्रेणफल जिले में ९३,००० है। इस मिस्ट्री का रंग सतह पर हलका भूरा होता है। जबकि नमी पाकर वह गहरा भूरा होता है। निचली पट्टी का रंग हलका लाल भूरा होता है और वह गहराई के साथ गहरा होता है। इसमें चूहे का अंश अधिक होता है। ये मिस्ट्री अपेक्षाकृत अधिक उपजाऊ होती है। खरीफ की फसल में इसमें स्वाद, अर्थात्, बलहल आदि फसलें उगाने के साथ-साथ रबों जीव गहरी की फसलें उगाई जाती है। सिंचाई तथा उर्फियों का सम्भवित प्रयोग करके अच्छी पैदा कर आग्रह की जा सकती है।

हल्की काबर मिस्ट्री छोटे-छोटे दुकड़ों के रूप में मिलती है। जनपद में इसका श्रेणफल १,०२,५०० है। सतह पर इन मूढळों का रंग गहरा स्वर्णिम होता है। जूती का पाकर काला दिखाई देने लगता है। सतह पर ये मिस्ट्री महीन सर्पचना वाली होती है। शुष्क अवस्था में यह ढोंस व बटोर हो जाती है। किन्तु नमी पाकर वह मुलायम व चिपिचिपी हो जाती है। इस मिस्ट्री की जलधारण क्षमता उच्च होती है, और भूमिगत जल लर्न ८-१० मीटर होता है। इस प्रकार की मिस्ट्री की उद्यान श्रमता अधिक होती है। खरीफ में स्वाद, अर्थात् तिलंकन की मिलियत कृषि करते हैं और रबों में गहरी तथा चाँदी की फसलें उगाने हैं। शुष्क खेती तकनीकी अथवा अच्छी सिंचाई सुविधाओं का साथ अच्छी पैदा कर आग्रह की जा सकती है।

भारी काबर मिस्ट्री मुख्य रूप से हल्की तथा भारी मारा मूढळों के बीच-बीच दुकड़ों के रूप में मिलती है। हल्की काबर की अपेक्षा यह अधिक गहरी है। जिले में इसका श्रेणफल १५,४०० है। सतह पर इसका रंग बहुत गहरा स्वर्णिम होता है। नमी पाकर वह काला प्रति तित होता है। शुष्क अवस्था में यह अत्यन्त ढोंस व बटोर हो जाती है। इसमें जल धारण क्षमता अधिक होती है। भूमिगत जल लर्न १३-१६ मीटर के मध्य रहता है। लोहा तल्ल की अधिकता होती है। चूही का मात्रा सतह में कम तथा गहराई पर बढ़ती होती है। इस मिस्ट्री में उद्यान श्रमता अच्छी है। किन्तु शुष्क खेती की नियम तकनीकी सिंचाई की व्यवस्था तथा रासायनिक उर्फियों के प्रयोग से अच्छी पैदा कर आग्रह की जा सकती है।

हल्की मार मिस्ट्री समतल धारातर पर पाई जाती है। इसका श्रेणफल ५९,३०० है। सतह पर इस मिस्ट्री का रंग काला होता है। शुष्क अवस्था में सम्बंध में आमे दे सुमालयम व चिपिचिपी हो जाती है। इस मिस्ट्री में नीचे की पट्टी में लोहा तल्ल तथा आधार तल में ढोंसे के कण पाये जाते हैं। मिस्ट्री में उचित नमी होने पर ही कृषिकार्य सम्मान होता है क्योंकि अधिक नमी पर फूलने तथा सुखने पर बहुत सल्ट व दरा बरा हो जाती है। उचित प्रत्येक करके उर्फियों रबों नवीन अच्छी उद्यान श्रमता वाली प्रजातियों की फसलें उगाकर ज्यादा अच्छी पैदा कर ली जा सकती है।

भारी मार मिस्ट्री का रंग काला होता है। और इसमें भिडंत का अंश अधिक होता है। इसका श्रेणफल १५,४०० है। जन निकाल अच्छा है और यह तवक में भी जल सकता नहीं है। ग्रीष्म काल में भूमिगत जल लर्न ७-९ मीटर के मध्य रहता है। ये मिस्ट्री भी हल्की मार के समान ही जल के सम्बंध में आकर फूल जाती है। तथा सुखने पर कटोर तथा गहरी बाहर जुता हो जाती है। उचित नमी पर ही कृषि कार्य करके फसलें की उपयोग सम्मान होता है। खरीफ में स्वाद, तथा रबों में गहरे, जो तथा चाँदी की अलग-अलग एवं मिलियत कृषि की जाती है। इसमें रासायनिक उर्फियों का प्रयोग बहुत हुई पैदा कर आग्रह के रूप में किया जा सकता है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>Diameter of Soil Particulars in mm</th>
<th>Mar.</th>
<th>Kabar</th>
<th>Parua</th>
<th>Kankar</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>S.</td>
<td>S.S.</td>
<td>S.</td>
<td>S.S.</td>
</tr>
<tr>
<td>0.16</td>
<td>%</td>
<td>%</td>
<td>%</td>
<td>%</td>
</tr>
<tr>
<td>0.25</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>3.07</td>
<td>4.04</td>
</tr>
<tr>
<td>0.16-0.032</td>
<td>0.185</td>
<td>2.0</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>0.16-0.032</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>33.95</td>
<td>34.79</td>
</tr>
<tr>
<td>0.25-0.032</td>
<td>31.90</td>
<td>29.45</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
</tr>
<tr>
<td>0.16-0.032</td>
<td>35.1</td>
<td>35.7</td>
<td>33.03</td>
<td>31.65</td>
</tr>
<tr>
<td>0.16-0.008</td>
<td>7.1</td>
<td>9.75</td>
<td>9.70</td>
<td>9.54</td>
</tr>
<tr>
<td>0.008-0.004</td>
<td>7.6</td>
<td>8.4</td>
<td>6.90</td>
<td>6.78</td>
</tr>
<tr>
<td>0.004-0.002</td>
<td>11.6</td>
<td>11.1</td>
<td>4.51</td>
<td>5.01</td>
</tr>
<tr>
<td>0.002</td>
<td>1.35</td>
<td>1.05</td>
<td>0.68</td>
<td>0.60</td>
</tr>
</tbody>
</table>

S. - Surface soils upto 6" Depth
S.S. - Sub - surface soils below 6" Depth.

2. J.P. Saxena Agriculture Geography of Bundelkhand Page No. 128, 129.
### TABLE - 4 PERCENTAGE OF CERTAIN SOIL CONSTITUENTS AT
EXPERIMENTAL FARM STATION ORAI

<table>
<thead>
<tr>
<th>Soil Constituents.</th>
<th>Mar.</th>
<th>Kabar</th>
<th>Parua</th>
<th>Kankar</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>S.</td>
<td>S.S.</td>
<td>S.</td>
<td>S.S.</td>
</tr>
<tr>
<td>Nitrogen (%)</td>
<td>.04</td>
<td>0.039</td>
<td>0.039</td>
<td>.031</td>
</tr>
<tr>
<td>Available phosphoric</td>
<td>.01</td>
<td>.008</td>
<td>.0068</td>
<td>.0049</td>
</tr>
<tr>
<td>Acid (%)</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>Available potash (%)</td>
<td>.015</td>
<td>.016</td>
<td>.031</td>
<td>.009</td>
</tr>
<tr>
<td>Equivalent to Calcium Carbonate.</td>
<td>-</td>
<td>-</td>
<td>.63</td>
<td>.49</td>
</tr>
</tbody>
</table>

S - Surface Soils (6"

S.S. - Sub Surface Soils (6"

---

1. J.P. Saxena Page No. 464, Ependix - II
   Experimental farm station orai (office record)
(ब) सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि
(ब) सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि

श्रेणीय वितरण - जनसंख्या

भूमि एवं जनसंख्या का आयाम में प्रभाव सम्बन्ध है, जो एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। मानव की जीवन के सम्पूर्ण समय में भूमि की महत्ती आवश्यकता प्रतीत होती है। मानव ही भूमि का सबसे अधिक लाभ प्राप्त करने वाला प्राणी है। भूमि ममुख्य को रहने का स्थान तथा भोजन की सुविधा उपलब्ध होती है तथा मानव उदाम स्थान भी है। भूमि मानव की अनुसंधान स्थली है, मानव भूमि के महत्त्व को समझने वाला प्राणी है।

जनपद जालीन की 983988 जनसंख्या 5449 है, श्रेणी में फैली हुई है। यह जनपद उत्तर प्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों में से है।

यहां अपेक्षाकृत जनसंख्या कम है। लेकिन अब इसकी जनसंख्या बढ़ी दर तीव्र हो रही है। तथा भूमि पर जनसंख्या का विकास बढ़ रहा है। जिसके फलस्वरूप जनपद में वन सम्पत्ति कम होती जा रही है। अतः मानव को भूमि का उपयोग उचित प्रकार से करना आवश्यक है।

एवं भविष्य में बढ़ने वाले मानव दवाका स्वरूप स्पष्ट एवं परदर्शी रहें। किसी भी श्रेणी के विकास की दर प्रायः जननकी चरों जैसे (१) जनसंख्या का आयाम (२) जनसंख्या विकास दर (३) आय संरचना आदि से बहुत प्रभावित होती है। ये सभी कारण उपयोग वित्तवाद की मात्रा को प्रस्तुत एवं परीक्षण रूप से प्रभावित करते हैं। वातावरण विविधता की मात्रा किसी भी अर्थ व्यवस्था अथवा श्रेणी के विकास को अपेक्षित गति तभी दे पाती है, जबकि जनसंख्या की विकास दर तथा इसका गुणात्मक एवं परिणाम:सम्पन्न दोनों ही रूप इसके अनुलघ हों। सामान्यतः आर्थिक विकास का मापदंड प्रतिवर्षांतर आय को माना जाता है।

यदि अर्थ व्यवस्था में प्राकृतिक साधनों का अनुकूल विवाहन जनसंख्या की कमी के कारण नहीं हो पाता है, तो जनसंख्या बुद्धि का स्वागत करना चाहिये। जिससे प्राकृतिक साधनों का समुचित उपयोग करके प्रति व्यक्ति आय में बुद्धि होती रहती है। उदातम बुद्धि के बिन्दु तक पहुँचने के पत्ताध जनसंख्या में बुद्धि का सरा प्रभाव पड़ने लगता है।

कभी मानव प्राकृतिक प्रकृतियों, हिंसक पशुओं आदि से भयभीत रहता था। आज वह किसी और से नहीं अपने आपसे भयभीत है। सभी समस्याओं की क्षेत्र जनसंख्या से जंग दिखाई देती है। भारत की पंचवर्षीय योजनाओं की विफलता का प्रेरणात्मक मानव संख्या की अवधारणा बुद्धि को ही जाता है। आज मानव-मानव शोषण का निर्देश हो रहा है। “प्राकृतिक प्रक्षेत्रों पर विविध पाने वाला आज अपनी ही संख्या से पासर हो चुका है।“

भूमि उपयोग में मानव एक महत्वपूर्ण कारक है। अतः भूमि उपयोग के सम्बन्ध में जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक है।

क्षेत्रीय इसी के आधार पर तत्वमान आधिक विषयों की योजनाओं का निर्धारण एवं वित्तवाद करके आज सकता है। अतः इसके लिये निम्न पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक है।

1. जनसंख्या बुद्धि एवं विकास दर।
2. श्रेणीय वितरण।
3. संगठन।
4. साक्षरता।
5. विकास शीलता।
6. व्यवसायात्मक संख्या।

2. ए.जै जेड जामाली निमाइ एवं जनसंख्या बुद्धि और जनसंख्या संरचना, पेठ-65, 76 उत्तर भारत ममुख पत्रिका भाग-25 नं. 2, 1989, विलिंग्नर।

(22)
1. जनसंख्या वृद्धि -

आधुनिक समय में जनसंख्या वृद्धि एक बिगड़ समस्या है। जिसके कारण समस्त उपलब्ध सुविधाओं का अभाव होता जा रहा है। यदापि लोगों का विचार है कि हर हमन के साथ ही हमारे हाथ भी तो होते हैं लेकिन वे इस विचार को भूल जाते हैं कि इन हाथों की उपयोगी बनाने के लिए भी तो बहुत कुछ साधन उपलब्ध कराना आवश्यक है। और वह कहां से पूरा होगा।

शासकीय प्रयासों के चलते ग्रामीण स्तर पर निर्मल मूल्य दर का घटना जनसंख्या की वृद्धि का एक महत्वपूर्ण तथ्य है।

जनपद जालीन जनसंख्या की दूरी से उत्तर प्रदेश का एक बिगड़ जनसंख्या बात श्रेणी है। और अध्ययन क्षेत्र उर्दू तहसील भी इसी बात का आयाम नहीं है। अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश ग्रामीण अंचल अभी तक आधुनिक परिवर्तनों से अहुदूत हैं, और निर्मल जनसंख्या बृद्धि अंधकारभवन भविष्य की ओर संकेत करती है। इसके साथ ही जाति, धर्म, एवं प्राचीन परम्पराओं भी जनसंख्या बृद्धि को प्रभावित करती हैं निम्न तालिका में अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के घनत्व का वितरण प्रस्तुत है।

तालिका - 5 न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या वृद्धि

<table>
<thead>
<tr>
<th>न्याय पंचायत</th>
<th>1981</th>
<th>1991</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>खरूसा</td>
<td>12,446</td>
<td>14,895</td>
</tr>
<tr>
<td>गढ़र</td>
<td>12,001</td>
<td>14,932</td>
</tr>
<tr>
<td>रावासइयू</td>
<td>10,970</td>
<td>13,297</td>
</tr>
<tr>
<td>करंमर</td>
<td>13,582</td>
<td>15,863</td>
</tr>
<tr>
<td>एर</td>
<td>12,438</td>
<td>14,315</td>
</tr>
<tr>
<td>कुसमिलिया</td>
<td>8,942</td>
<td>10,370</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़गांव</td>
<td>6,595</td>
<td>7,704</td>
</tr>
<tr>
<td>एट</td>
<td>13,102</td>
<td>16,661</td>
</tr>
<tr>
<td>बिनीता</td>
<td>9,945</td>
<td>11,819</td>
</tr>
<tr>
<td>जैसारी कलां</td>
<td>9,351</td>
<td>10,611</td>
</tr>
<tr>
<td>डकोर</td>
<td>15,017</td>
<td>18,233</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल योग</td>
<td>1,24,389</td>
<td>1,48,700</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उक्त तालिका देखने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र में पिछले दशक में लगभग 24300 की वृद्धि हुई है। तथा न्यायपंचायत स्तर पर सबसे अधिक बड़गांव न्याय पंचायत में 3559 व्यक्तियों की वृद्धि हुई है जबकि सबसे कम कुसमिलिया न्याय पंचायत में 1109 व्यक्तियों की वृद्धि हुई है। जबकि अन्य न्याय पंचायतों में 1200 से 3500 के मध्य जनसंख्या वृद्धि हुई है। वे एक कठुआ स्तर हैं जिसे इतिहास निर्मल तथा संस्करण 1980, 1990

1. एच. एल. जमाली निम्नांक में जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या संक्षेपण, पेज-65, 76 उपर भारत भूगोल पत्रिका भाग-25 नं. 2, जून 1989, शिक्षारी।
2. जनपदी सेन्सर हैण्डबुक 1980, 1990

(23)
POPULATION INCREASE IN NYAYA PANCHAYAT

NYAYA PANCHAYAT

POPULATION

- 20000
- 15000
- 10000
- 5000
- 0

1981
1991
जनसंख्या वितरण:

जनसंख्या के वितरण को दर्शाने के लिये जनसंख्या घनत्व प्रवाणता ही एक मात्र उचित साधन है। इसके द्वारा भूमि पर जनसंख्या के वास्तविक भार को जाना जा सकता है। किसी भी क्षेत्र के मध्य भाग में जनसंख्या घनत्व अधिक तथा बाह्य भागों में जनसंख्या घनत्व कम पाया जाता है। किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या का कुल उपलब्ध क्षेत्रफल से अनुपात की घनत्व कहा जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या वितरण बहुत असमान है, और जनसंख्या घनत्व में भी बाह्य असमानता पाई जाती है। निम्न तालिका में न्याय पंचायत स्तर पर जनसंख्या घनत्व प्रदर्शित है।

### तालिका - 6

<table>
<thead>
<tr>
<th>न्याय पंचायत</th>
<th>कुल जनसंख्या</th>
<th>क्षेत्रफल (कर्ल कि.मी.)</th>
<th>घनत्व प्रतिकर्ण कि.मी.</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>खरसा</td>
<td>14895</td>
<td>8101.40</td>
<td>183</td>
</tr>
<tr>
<td>गढ़र</td>
<td>14932</td>
<td>10105.79</td>
<td>147</td>
</tr>
<tr>
<td>रूट अबूकु</td>
<td>13297</td>
<td>5988.79</td>
<td>222</td>
</tr>
<tr>
<td>करमेर</td>
<td>15863</td>
<td>10579.88</td>
<td>149</td>
</tr>
<tr>
<td>पेर</td>
<td>14315</td>
<td>10300.27</td>
<td>138</td>
</tr>
<tr>
<td>कुसमिलिया</td>
<td>10370</td>
<td>4911.71</td>
<td>211</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़गांव</td>
<td>7704</td>
<td>7124.81</td>
<td>108</td>
</tr>
<tr>
<td>एट</td>
<td>16661</td>
<td>7154.97</td>
<td>232</td>
</tr>
<tr>
<td>बिनीरा</td>
<td>11819</td>
<td>8582.61</td>
<td>137</td>
</tr>
<tr>
<td>जैसारीकला</td>
<td>10611</td>
<td>6514.41</td>
<td>162</td>
</tr>
<tr>
<td>डोर</td>
<td>18233</td>
<td>12936.76</td>
<td>140</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल</td>
<td>148700</td>
<td>92301.40</td>
<td>166</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उक्त तालिका को देखने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि अध्ययन क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व 166 व्यक्ति प्रति कर्ल कि.मी. है। जबकि न्याय पंचायत स्तर पर साधियक जनसंख्या घनत्व 232 व्यक्ति प्रति कर्ल कि.मी. पट न्याय पंचायत में है। तथा सबसे कम जनसंख्या घनत्व 108 व्यक्ति प्रति कर्ल कि.मी. बड़गांव न्याय पंचायत में है। दोष न्याय पंचायतों में 108 तथा 232 व्यक्ति प्रति कर्ल कि.मी. के मध्य में ही जनसंख्या घनत्व है। भारत का जनसंख्या घनत्व 221 व्यक्ति प्रति कर्ल कि.मी. तथा उत्तर प्रदेश का जनसंख्या घनत्व 377 व्यक्ति प्रति कर्ल कि.मी. है। जो कि अध्ययन क्षेत्र के कुल घनत्व से अधिक है।
लिंग अनुपातः

किसी भी क्षेत्र के आर्थिक सामाजिक, तथा राजनैतिक विकास में जनसंख्या का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है | तथा कुल जनसंख्या में निम्नों एवं पुरुषों के अनुपात के आधार पर ही कृषि कार्यों एवं अन्य कार्यों हेतु ब्रह्म की उपलब्धता का ज्ञान होता है। किसी भी कार्य में लगे ब्रह्म को नकारा नहीं जा सकता है | अध्ययन क्षेत्र में भी अन्य क्षेत्रों की भूमिका ही उद्धवाण्य तथा मध्यम वर्गीय महिलाओं एवं बच्चे कृषि कार्यों में सहयोग नहीं देते | जबकि निम्न वर्ग की महिलाओं तथा बच्चे कृषि से सम्बन्धित अनेक कार्यों में पुरुषों का सहयोग करते हैं | अध्ययन क्षेत्र में लिंग अनुपात को निम्न तालिका में दिखाया गया है।

तालिका - 7

लिंग अनुपात - 1991

<table>
<thead>
<tr>
<th>न्याय पंचायत</th>
<th>पुरुषों की संख्या</th>
<th>लिंगों की संख्या</th>
<th>1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>खुल्सा</td>
<td>8220</td>
<td>6675</td>
<td>812</td>
</tr>
<tr>
<td>गढ़र</td>
<td>8189</td>
<td>6743</td>
<td>823</td>
</tr>
<tr>
<td>रूपनढ़े</td>
<td>7259</td>
<td>6038</td>
<td>831</td>
</tr>
<tr>
<td>करमेर</td>
<td>8747</td>
<td>7116</td>
<td>813</td>
</tr>
<tr>
<td>एरा</td>
<td>7912</td>
<td>6403</td>
<td>809</td>
</tr>
<tr>
<td>कुसमलिया</td>
<td>5659</td>
<td>4711</td>
<td>832</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़गांव</td>
<td>4231</td>
<td>3473</td>
<td>820</td>
</tr>
<tr>
<td>पट</td>
<td>9139</td>
<td>7522</td>
<td>823</td>
</tr>
<tr>
<td>बिनीरा</td>
<td>6532</td>
<td>5287</td>
<td>809</td>
</tr>
<tr>
<td>जैसरीलाला</td>
<td>5929</td>
<td>4682</td>
<td>789</td>
</tr>
<tr>
<td>डोंगर</td>
<td>9925</td>
<td>8308</td>
<td>837</td>
</tr>
</tbody>
</table>

कुल         | 81742           | 66958           | 819                              |

उक्त तालिका में स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा लिंगों की संख्या कम है, तथा कुल 1000 पुरुषों पर 819 लिंगों कुल क्षेत्र में लिंग अनुपात को स्पष्ट कर रही है | सबसे अधिक लिंगों की संख्या 1000 पुरुषों पर डोंगर न्याय पंचायत में 837 है | जबकि सबसे कम लिंगों 789, 1000 पुरुषों पर जैसरीलाला न्याय पंचायत में है | जबकि अन्य न्याय पंचायतों में यह अनुपात 809 से 832 लिंगों का है।

सामान्यतः यह देखा जाता है कि जिस क्षेत्र में लिंगों की संख्या अधिक होती है वहां पर महिला श्रमिकों की संख्या भी अधिक होती है | महिलाओं की कार्य श्रमता पुरुषों की कार्य श्रमता से कम होती है | अत: इसका सीधा प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है।

(25)
“शिक्षा मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है इसके द्वारा ही किसी क्षेत्र में प्रगति का दीपक प्रज्वलित होता है।” अतः ‘शिक्षा संस्थाओं की स्थिति उपर्युक्त स्थान पर होने से उस क्षेत्र का विकास स्वाभाविक है।’ अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता का वितरण इस प्रकार है।

### तालिका - 8 अध्ययन क्षेत्र में न्याय पंचायत लेख पर साक्षरता 2 - 1995 -

<table>
<thead>
<tr>
<th>न्याय पंचायत</th>
<th>कुल जनसंख्या</th>
<th>साक्षर जनसंख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>पुरुष</td>
<td>ली</td>
</tr>
<tr>
<td>खरसाना</td>
<td>8220</td>
<td>6675</td>
</tr>
<tr>
<td>गढ़</td>
<td>8189</td>
<td>6743</td>
</tr>
<tr>
<td>स्थानाचाहू</td>
<td>7259</td>
<td>6038</td>
</tr>
<tr>
<td>करमेर</td>
<td>8747</td>
<td>7116</td>
</tr>
<tr>
<td>पेट</td>
<td>7912</td>
<td>6403</td>
</tr>
<tr>
<td>कुसमलिया</td>
<td>5659</td>
<td>4711</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़ालांव</td>
<td>4231</td>
<td>3473</td>
</tr>
<tr>
<td>पट</td>
<td>9139</td>
<td>7522</td>
</tr>
<tr>
<td>बिनीरा</td>
<td>8532</td>
<td>5287</td>
</tr>
<tr>
<td>जैसारीकला</td>
<td>5929</td>
<td>4682</td>
</tr>
<tr>
<td>डोकर</td>
<td>9925</td>
<td>8308</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल</td>
<td>81742</td>
<td>66958</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उक्त तालिका देखने से प्राप्त हुआ है कि लीलों की साक्षरता पुरुषों की अपेक्षा कम 21.35% है, जबकि पुरुषों की साक्षरता 53.98% है।

1. बी.बी.सिंह, उत्तर भार मूर्तियों पत्रिका, माग-24, 1988 दिसंबर, पेज-151
2. जनपदीय साधनकी पत्रिका - 1996
व्यवसायिक संरचना:

कुल जनसंख्या का कितना भाग विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में कार्यरत है | इसका विवेचना व्यवसायिक संरचना का विश्लेषण कहलाता है | इसके अध्ययन से किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास के स्वरूप एवं जीवन रूप के स्वरूप का ज्ञान होता है | तथा प्रकृति द्वारा प्रदत्त संसाधनों पर जनसंख्या के दबाव का भी ज्ञान होता है | अध्ययन क्षेत्र में व्यवसायिक संरचना का विश्लेषण निम्न तालिका में स्पष्ट हैं | ³

तालिका - 9
जनसंख्या का व्यवसायिक वितरण

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>पुरुषों की संख्या</th>
<th>महिलाओं की संख्या</th>
<th>कुल जनसंख्या</th>
<th>कार्यरत जनसंख्या के आधार पर %</th>
<th>कुल जनसंख्या के आधार पर %</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>कृषक</td>
<td>27133</td>
<td>2316</td>
<td>29449</td>
<td>70.62</td>
<td>18.24</td>
</tr>
<tr>
<td>कृषक मजदूर</td>
<td>9905</td>
<td>2092</td>
<td>11997</td>
<td>28.77</td>
<td>6.66</td>
</tr>
<tr>
<td>पशुपालक</td>
<td>335</td>
<td>19</td>
<td>354</td>
<td>0.84</td>
<td>0.22</td>
</tr>
<tr>
<td>घरेलू उद्योग</td>
<td>1</td>
<td>-</td>
<td>1</td>
<td>0.002</td>
<td>0.006</td>
</tr>
<tr>
<td>लघु एवं बड़े उद्योग</td>
<td>841</td>
<td>50</td>
<td>891</td>
<td>2.13</td>
<td>0.59</td>
</tr>
<tr>
<td>खिस्त एवं वाणिज्य</td>
<td>921</td>
<td>30</td>
<td>951</td>
<td>2.28</td>
<td>0.63</td>
</tr>
<tr>
<td>परिवहन एवं संचार</td>
<td>337</td>
<td>1</td>
<td>338</td>
<td>0.81</td>
<td>0.22</td>
</tr>
<tr>
<td>अन्य सेवायें</td>
<td>2029</td>
<td>146</td>
<td>2175</td>
<td>5.21</td>
<td>0.51</td>
</tr>
<tr>
<td>निर्माण विभाग</td>
<td>288</td>
<td>2</td>
<td>290</td>
<td>0.69</td>
<td>0.069</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल</td>
<td>41697</td>
<td>4656</td>
<td>46353</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>कार्यरत जनसंख्या का %</td>
<td>(9.95)</td>
<td>(1.11)</td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>काम न करने वालों की संख्या का %</td>
<td>39788</td>
<td>54488</td>
<td>84276</td>
<td>9.50</td>
<td>13.01</td>
</tr>
<tr>
<td>कुल योग</td>
<td>81742</td>
<td>66958</td>
<td>148700</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

1. जनपदीय सूचना हैण्डबुक - 1991
उक्त तालिका देखने से स्पष्ट ज्ञात होता है कि कुल जनसंख्या का 70.62% क्रष्क वर्ग है। तथा 27.77% क्रष्क मजदूर है। जिसमें से 90% क्रष्क पुरुष तथा शेष 10% क्रष्क पत्नियाँ हैं तथा पत्नियाँक्ला जनसंख्या का 0.84% लघु पुरुष वर्ग, बड़े उद्यम 0.002% तथा परिवहन एवं संचार के साधनों में 81% जनसंख्या कार्यरत है।

विभिन्न न्याय पंचायत स्तर पर व्यवसायिक संरचना का वितरण निम्न तालिका में स्पष्ट है।

व्यवसायिक संरचना (1991)  तालिका - 10

<table>
<thead>
<tr>
<th>न्याय पंचायत</th>
<th>क्रष्क</th>
<th>मजदूर</th>
<th>उद्यम</th>
<th>अन्य सेवा</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>कुल</td>
<td>कुल जनसंख्या का %</td>
<td>कुल</td>
<td>कुल जनसंख्या का %</td>
</tr>
<tr>
<td>खस्सासा</td>
<td>3155</td>
<td>67.87</td>
<td>1123</td>
<td>23.80</td>
</tr>
<tr>
<td>गए</td>
<td>2760</td>
<td>58.62</td>
<td>1356</td>
<td>28.80</td>
</tr>
<tr>
<td>तूराजस्तूर</td>
<td>3099</td>
<td>76.21</td>
<td>665</td>
<td>16.35</td>
</tr>
<tr>
<td>कटमर</td>
<td>3451</td>
<td>71.91</td>
<td>894</td>
<td>18.62</td>
</tr>
<tr>
<td>एल</td>
<td>3185</td>
<td>79.31</td>
<td>1060</td>
<td>23.06</td>
</tr>
<tr>
<td>कुसुमलिया</td>
<td>1893</td>
<td>58.08</td>
<td>1040</td>
<td>31.91</td>
</tr>
<tr>
<td>बड़गांव</td>
<td>1442</td>
<td>56.57</td>
<td>801</td>
<td>31.42</td>
</tr>
<tr>
<td>एट</td>
<td>2066</td>
<td>41.89</td>
<td>1786</td>
<td>36.21</td>
</tr>
<tr>
<td>बिनीता</td>
<td>2223</td>
<td>59.82</td>
<td>1163</td>
<td>31.29</td>
</tr>
<tr>
<td>जैसारीकला</td>
<td>2456</td>
<td>67.47</td>
<td>992</td>
<td>27.25</td>
</tr>
<tr>
<td>डकोर</td>
<td>3719</td>
<td>69.22</td>
<td>1117</td>
<td>20.79</td>
</tr>
</tbody>
</table>

उक्त तालिका को देखने से ज्ञात होता है कि एट न्याय पंचायत में विभिन्न व्यवसायों में लगे व्यक्तियों का प्रतिशत सबसे अधिक है, जबकि क्रष्क नारे का प्रतिशत 71.91% कटरा न्याय पंचायत में है। उद्यम धनों में सबसे कम 1.97% जैसारीकला न्याय पंचायत में है, तथा सबसे अधिक 11.41% एट न्याय पंचायत में है। मजदूर सबसे अधिक 36.21% एट में तथा सबसे कम 16.35 रूपा अड़ू म्याय पंचायत में है। क्रष्क सबसे कम 41.89% में तथा सबसे अधिक 76.21% रूपा अड़ू म्याय पंचायत में है।

1. जनपदीय संस्थान हैण्ड वुड़ - 1991
परिचय एवं संचार के साधन -

मानव की सम्पत्ति और संस्कृति का विकास परिचय होता है जिसमें अर्थात् परिचय होता है जिसमें किसी देश, क्षेत्र व नगर के आधिकारिक, सामाजिक प्राथमिक और राजनैतिक हिस्ट्रीग्रैफ्क में सहायक होता है। भारत में परिचय मानव समूह की भाषात्मक एवं आधिकारिक का एक महत्वपूर्ण साधन है।

परिचय के साधनों का ऐसा भी महत्व है, जैसा कि मानव शरीर में रक्त वाहिनी धमनियों का होता है।

परिचय वह साधन है जो किसी भी अविस्तर क्षेत्र के आधिकारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में तीव्र विकास का लाभ मिलता है।

ग्रामीण क्षेत्र के विकास में तो परिचय के साधनों का प्रमाण विकास का रूप से परिलक्षित होता है। अध्ययन क्षेत्र में परिचय का विकास अंग्रेज़ी के शास्त्रकाल में हुआ था। उक्त क्षेत्र में रेल, सड़क परिचय के साधनों का विकास मुख्य रूप से हुआ है।

जबकि बायू, परिचय का विकास इस क्षेत्र में नहीं हुआ है।

रेल परिचय -

अध्ययन क्षेत्र में रेल परिचय का विकास हद उच्च है। कुल 240 किमी. लंबी रेल लाइन पाई गई है जो सारे क्षेत्र को निर्माण तथा वाहन भरने के लिए उपयोगी है। अध्ययन क्षेत्र के मध्य में रेलवे स्टेशनां भी हैं जिनका नाम रांची रेलवे स्टेशन रांची रेलवे स्टेशन है। इन क्षेत्रों का मुख्य रूप से वाहन और निर्माण उद्योगों का विकास है।

उद्योग -

किसी भी क्षेत्र के सामाजिक एवं आधिकारिक विकास के लिए उस क्षेत्र में स्थापित उद्योगों का विकास महत्वपूर्ण है। क्योंकि उद्योगों के न केवल रोजगार के अवसर भी उन्हें, वर्तमान रोजगार में लोगों के जीवन िंतार में भी सुधार सम्भव होता है।

किसी भी क्षेत्र में आध्ययन विकास के लिए उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, क्षेत्र में मान की सुविधा, अंतर्गत मजदूर आदि की उपलब्धि निर्माण आवश्यक होता है। अध्ययन क्षेत्र में बनाई गई क्रीड़ा का प्रायोगिक अन्य कारोबार के क्षेत्र में मान की भी महत्व है। इस कारण से यह क्षेत्र औद्योगिक विकास में काफी पिछड़ा हुआ है।

1. बो. सि. सिंह, पी.एस. नीताम, शालिग राम रजक, मूर्ति उपयोग एवं नियोजन, उत्तर भारत मूर्ति पत्रिका माग-24, 1988 दिवस-प्रेज़ 151"
2. बैनन
अध्ययन क्षेत्र में मुख्य रूप से लघु उद्योगों एवं धरती उद्योगों के रूप में उद्योगों का विकास हुआ है। सिसे मुख्य रूप से कृषि पर आधारित फार्मिंग, कानून कला, बाल मिले, धान मिले, तेल मिल, हथिकरघा आदि उद्योगों का विकास हुआ है। छठी पंचवर्षीय योजना तक इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार के बहुद उद्योगों का विकास नहीं हुआ था। किन्तु राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजना के तहत वो बाली सुबिधाओं के कारण कानून सरकार उर्जा मार्ग पर आधारित क्षेत्र का विकास हुआ। और अनेक बहुद उद्योगों को लगाया गया। जिनमें से मुख्य इस प्रकार हैं।

1. मेसर्स उर्फी हिन्देक्कुर्स प्रसेंसर्स प्राइवेट लिमिटेड।
2. मेसर्स उर्फी आयल केमिकल प्राइवेट लिमिटेड।
3. प्रगति स्टील बेजिङो प्राइवेट लिमिटेड।
4. प्रगति बेजिङो फूड्स एण्ड फि।
5. प्रगति हिन्दुस्वाम लीफर प्राइवेट लिमिटेड।
6. प्रगति बलबीर स्टील प्राइवेट लिमिटेड।
7. प्रगति उर्फी फ्लॉर मिल्स प्राइवेट लिमिटेड।
8. प्रगति अनुभा कापटिङ्ग प्राइवेट लिमिटेड।

इन सभी बहुद आधारित इकाइयों के अतिरिक्त अनेक लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास हुआ था। अनेक व्यक्तियों को क्षेत्र के अवसर प्राप्त हुवे। तथा क्षेत्र का विकास सम्मान हो सका। लघु उद्योगों के अतिरिक्त बर्फ फैक्ट्री, शीत बन्दराण केन्द्र, तेल, आटा एवं बाल मिले, प्रिंटिंग प्रेस, चमड़े का सामान मन्त्र उद्योग, जूटा उद्योग, हथिकरघा उद्योग, सावनु उद्योग आदि भी विकसित है।

क्षमित खिनिज

खिनिज सम्पदा एक ऐसा संसाधन है जो कि प्रकृति द्वारा हमें निशुल्क प्राप्त होता है। तथा किसी भी कारण की आधिक प्रगति में सहायक होता है। अध्ययन क्षेत्र में खिनिज संसाधन का बहुद अभाव है। केवल बेतता नदी के तट पर मोरंग खिनिज के रूप में प्राप्त होता है। जिसका प्रयोग पूर्ण निर्माण आदि कार्यों में होता है। तथा इसे फसल, सैद्धांति पुनर्प्रयोग तथा मुहाना से अन्य फलों को मेरा जाता है। यह मोरंग उड़ कोई क्षेत्र है। इसमें सुतिक पहाड़ीं और सैद्धांति में कुछ पहाड़ियां हैं जिनका प्रमुख निर्माण कार्य का है। परन्तु इसका प्रयोग निर्माण कार्यों में किया जाता है।

इसके अतिरिक्त भूगर्भिक खिनिज अनुसंधान के रिपोर्ट के अनुसार इस क्षेत्र में एक मिथिलिय महाराज के जमाने में पाई गई है। जिसका निकाला जाना अत्यन्त कठिन एवं महंगा है जिसके कारण इसका वोटन सम्मान नहीं है।

1. जनपद जालीन सामाजिक विभाग - 1994-95, पेज-15, 16